स्वतंत्रा प्राप्ति के पूर्व भारतीय राजे–रजवाड़े एवं जमींदार वर्ग पर पडे प्रभाव : एक अध्ययन

केशव कुमार राय

स्वतन्त्रता–प्राप्ति के पूर्व राजनीतिक और प्रशासनिक दृष्टि से भारत का समस्त क्षेत्र मुख्य रूप से दो भागों में बंटा हुआ था ब्रिटिश भारत और भारतीय रियासतें। भारत के 40 प्रतिशत क्षेत्र में फैली 563 रियासतों में भारत की जनसंख्या का 40 प्रतिशत निवास करता था। लेकिन इस अस्वाभाविक राजनीतिक और प्रशासनिक विभाजन के बावजूद भारत भौगोलिक दृष्टि से एक इकाई रहा है। 1857 के महाविद्रोह के बाद ब्रिटिश सरकार और देशी नरेशों के बीच 'सहयोगी–सम्बन्ध' सीमित हो गये थे और इन्द्र विद्यावाचस्पति के शब्दों में, 'देशी नरेशों का तानाशाही का महल ब्रिटिश सरकार की कृपा की नींव पर खड़ा था।

अंग्रेजी शासन व्यवस्था के प्रभावस्वयप भारतीय राजे–रजवाड़े धीरे–धीरे विखंडित तथा शक्तिहीन होते गए जिसके परिणामस्वरूप इस वर्ग के लोग स्वतंत्रता आंदोलन के पक्षधर होते चले गए। ठीक इस स्थिति के विपरित जमींदार वर्ग धीरे–धीरे मजबूत एवं धनाढ्य होते गए जिस कारण से इस वर्ग के लोग अन्त तक ब्रिटिश शासन के पक्षधर बने रहे।